website: www.pawanprawah.com

पवन प्रवाह

लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2015-17

मूल्य : तीन रुपये पृष्ठ-16

सत्य का प्रवाह सतत् प्रवाह

e-mail-pawanprawah@gmail.com

वर्ष 03 अंक 06 लखनऊ। सोमवार 14 से 20 नवम्बर-2016

लखनऊ व दिल्ली में जहरीली हवा-क्यों और कैसे आयी?

लेखक डॉ. भरत राज सिंह
स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के निदेशक एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र के प्रभारी हैं

पिछले सप्ताह दीवाली के तुरन्त बाद आसमान में धुन्ध हफ्ते भर छायी रही। इसका क्या कारण है, लोगो में तरह तरह की भ्रान्तिया पैदा हुयी। आज इसका एक वैज्ञानिक पहलू समाज के समस्त लोगों के सामने डॉ. भरत राज सिंह, वरिष्ठ पर्यावरणविद व निदेशक, स्कूल ऑफ़ मैनेजमेंट साइंसेज, लखनऊ प्रस्तुत किया जा रहा है।

स्थल-स्कूल ऑफ़ मैनेजमेंट साइंसेज, लखनऊ: हम सभी जानते हैं, हवा में प्रदुषण का मुख्य कारण औद्योगिकीकरण की अन्धाधुंध बढ़ोत्तरी व वाहनों की निरन्तर मांग तथा उसके इंजन उत्पन्न धुवा जो वाहनों के निकास पाइप से निरंतर निकलता रहता है तथा उसमे बढ़ोत्तरी होती रहती है। इस प्रकार आसमान में लगभग 30 से 40 किलोमीटर दूरी पर ग्रीन हाउस गैसेस का अधिक से अधिक जमाव व धरती से विकरण हुयी सूरज की किरणों से धरती गरम हो रही है। इस पर वाहनों व औद्योगिकीकरण से निअके धुएं के क्वालिटी को रोकने के लिए जलवायु संरक्षण नीति लागू की गयी है। जिससे पार्टिकुलेट मैटर (PM) पीएम-2.5-60 प्रति घनमीटर व पीएम-10 -100 प्रति घनमीटर तक रोकने हेतु तय किया गया है।

पूर्व घटनाएं: वर्ष 1952 में लन्दन में एक सप्ताह धुन्ध के बादल छाने व सल्फर डाई-ऑक्साइड की अधिक मात्र से लगभग 4000 मौतें हुयी थी वही अमेरिका में 1972 में लगभग 25 मौतों का पूर्व उदहारण मिलता है।

कारण: अब आईये जहरीली हवा जो दिल्ली व लखनऊ में एक सप्ताह तक बादल के रूप में छायी रही और जनता को सांस लेने में भी अधिक कठिनाई उत्पन्न हुयी तथा स्कूल व कॉलेज को भी बंद करना पड़ा, के वैज्ञानिक कारण आकलन करें। 30 अक्टूबर 2016 को दीवाली थी, तथा इस त्यौहार में उत्साह का प्रदर्शन करने की होड़ में बड़े शहरों में क्रैकर्स, चटाई व धुएं देने वाले फुलझड़ी पर करोड़ों रुपये का वारा-न्यारा किया गया और हवा को जहरीला बनाया गया। इसका असर यह हुआ कि बारिश के मौसम के अंत व शरद ऋतु के आगमन इस मोड़ पर रात में हवा में नमी आने से जलविन्दुओं भारीपन आने से ओस का रूप लिया वही यह जहरीली हवाये पुनः धरती के नजदीक जलविन्दुओ के दवाव में नीचे आने से सांस लेने में तकलीफ देने लगी। इस प्रकार की धुएं की धुंध चारो तरफ छाकर पूरे वतावरण में पीएम-2.5- 485 प्रति घनमीटर व पीएम-10 -1700 प्रति घनमीटर तक कई जगह दिन-दिन भर बनी रहकर जीवन के लिए घातक हो गयी।

उपाय: 1-ऐसी स्तिथि आने पर कागज व पत्तों कूड़ा करकट को नहीं जलना चाहिए। नहीं तो जहरीली हवाओं में अधिक बढ़ोत्तरी होगी।

2-सड़क व खुले स्थानों पर झारू का उपयोग पानी के छिड़काव के उपरांत करना चाहिए जिससे वातावरण में डस्ट व धूल के कड़ ने उड़े जो दमा आदि के लोगों के लिए अधिक घातक होगा।

3-स्कूल व कॉलेज जहां छात्र-छात्राएं पढ़ती हैं, अवकाश घोषित कर देना चाहिए तथा बुजुर्गों को बाहर न निकलने की हिदायक देकर, उन्हें सांस व दमा आदि के रोगों से बचाया जा सके।

4- यदि येसी स्थिति सप्ताह भर चलने की दृष्टिगत हो तो कृतिम बारिश कराया जाय अथवा सभी नागरिकों को विशेष हिदायत दी जाय की वह अपने घरों के आस-पास पानी का अधिक से अधिक छिड़काव किया जाय। इससे दुंवायुक्त बादल छट जाएंगे।

5- इस प्रकार की परिस्थिति आने पर अधिक से अधिक लोगों को वाहनों को कम से कम सड़क पर चलाना चाहिए। अथवा ओड-इवन का फॉर्मूला लागु कर देना चाहिए।

6-धुआ का बादल हवा के चलने व गर्म स्थान की तरफ टनल के रूप में आगे बढ़ने से धीरे -धीरे कम होगा।

7- दीवाली पर वायु प्रदुषण की अधिकता के कारण क्रैकर्स के खरीद-फ़रोख्त पर पुर्णतः प्रतिबंद लगाना अति आवश्यक होगा।